वार्षिक मूल्य 50 रूपये

धर्म जीवन

मार्च - 2015

* कुछ अन्धेरे कोने
* नेचर में आत्मिक रक्षा और उन्नति का नियम
* कल्याण सत्संग वा माता पिता सन्तान दिवस
* शुक्रिया कहें बात बन जाएगी
* अहंकारी नहीं, बुद्धिमान लोगों की संगत में रहें
* पत्नी का इलाज कराते-कराते गैरों से बना दर्द का रिशता
* श्राद्ध की सभा
* शुभ संग्राम

देवात्मा फरमाते हैं

बनाने और ढाने दोनों बातों में एक ही नियम काम करता है। दीवार बनाने में जैसे एक एक ईंट रखनी पड़ती है, एक के अनन्तर दूसरी और दूसरी के अनन्तर तीसरी रखने से दीवार बन जाती है वैसे ही ढाने में इस अमल की आवश्यकता है। पहले एक ईंट को निकालो, फिर दूसरी, फिर तीसरी, इसी तरह सारी दीवार बिलकुल ढै जावेगी। यही नियम अपने आत्मा में से अंह अनुराग आदि नीच शक्तियों को दमन करने और नाना प्रकार की उच्च शक्तियों को पैदा करने का है। प्रतिदिन की ज़िंदगी में जब ही किसी के सम्बन्ध में कोई अपमानकारी घटना हो, तब ही हाथ जोड़ो, माफी मांगो, उस हानि का जहां तक संभव हो, परिशोध करो, तब अवश्य यह अंह का अधिकार घटता जाएगा। जितना अधिक ऐसा अमल कर सकोगी, उतना ही इस नीच अनुराग के रदे घटते जांएगे। फिर जब देखो कि तुम्हारे अंह पर उचित चोट लगने से तुम्हें दु:ख नहीं होता, तब समझो कि यह नष्ट हो गया है। परन्तु जब तक ऐसी अवस्था न आवे, इस के रदों को बराबर धैर्य और हिम्मत के साथ निकालते जाने की आवश्यकता है। फर्ज़ करो कि यदि तुमने फिरोजपुर से लाहौर आना हो और तुम क़सूर में आ कर ही कहो, कि अब तो मुझ से और आगे जाया नहीं जाता, तो तुम लाहौर न पहुंच सकोगी। इसी प्रकार से एक बार माफी मांग कर यदि तुम यह कहो कि अब तो मुझ से बार बार माफी मांगी नहीं जाती, रोज़ रोज़ तो मुझसे हाथ नहीं जोड़े जाते, रोज़-रोज़ मुझ से नीचा नहीं हुआ जाता, तो अंह नष्ट न होगा। जैसे हम अपनी शारीरिक रक्षा और पालना के लिए प्रतिदिन खाना खाते हैं, दिन में दो बार चूल्हा फूंकते हैं और इस के भिन्न प्रतिदिन कई अंगों के द्वारा गंद निकालने का काम भी करते हैं, ऐसा क्यों करते हैं? इसलिए कि हम जानते हैं कि ऐसा करने के बिना हम ज़िन्दा नहीं रह सकते। वैसे ही हमें अपने आत्मिक जीवन की रक्षा शुद्धि और उन्नति के लिए भी प्रतिदिन उचित आहार पाने और अपनी मैल को धोने की नितान्त आवश्यकता है। हां यदि तुमने ज़िंदगी का सफर तै करना है, तो तुम्हें प्रतिदिन बनाने और ढाने के असूल को सामने रखना चाहिए और एक को पैदा करने और दूसरे को मिटाने के लिए यत्न करना चाहिए।

दुनिया में धर्म साधन के नाम से पूजा पाठ आदि तो बहुत जारी हैं, परन्तु उन से शुभ फल कुछ नहीं निकलता। अब यह तुम्हारा फर्ज़ है कि तुम्हारे साधन दुनिया के लोगों के पूजा पाठ की न्याईं न हों। तुम्हारे साधनों की विशेषता होनी चाहिए, वरना यदि उनकी न्याईं तुम्हारे साधन भी तुम्हारे जीवन में कोई उच्च परिवर्तन लाने का काम न करें तो वह सब निष्फल हैं। ऐसे साधन किसी काम के नहीं।

यदि कहलाने वाले किसी तीर्थ स्थान पर जाने या गंगा में डुबकी लगाने से पाप चले जाते, वा कोई हानिकारक शक्ति नष्ट हो जाती, तो हम बड़ी खुशी से तुम्हें अपने किराया पर गंगा भेज देते और कहते कि एक दफा छोड़ तीन दफा डुबकी लगा आओ, परन्तु शोक! वहां डुबकी लगाने से न तो कोई नीच शक्ति नष्ट होती है और न ही कोई उच्च शक्ति पैदा होती है। इस उद्देश्य की सिद्धि के लिए अपने निज के सच्चे धर्म साधनों की आवश्यकता है और उस सारे कोर्स में से गुज़रने की आवश्यकता है कि जिस की हम शिक्षा देते हैं।

धर्म जीवन

खण्ड 28 अंक 3

सम्पादक डा. विनोद खेड़ा | मार्च – 2015 | वार्षिक मूल्य 50 रूपये | सह सम्पादिका सुरजीत बराड़

कुछ अन्धेरे कोने

मनुष्य को क्या आत्मा और क्या आत्मिक अन्धेरे, दोनो की ही समझ अकसर जल्दी जल्दी नहीं होती, बेशक वह बड़ी उमर का हो, विद्वान हो, कुछ भी हो, बड़े से बड़ा पदधारी हो । इसी अन्धेरे के कारण वह अपने इर्द गिर्द के मनुष्यों को और अन्य वजूदों को, और न अपने आप की और अपने व्यवहार को ठीक और सही देखता है और देख सकता है। दिन के समय चमकते सूर्य की रोशनी के भीतर, आँखे, दिमाग और अन्य कई प्रकार का ज्ञान रखकर भी हम अन्धेरे के शिकार होते हैं और हमें इस अन्धेरे का कोई आभास भी नहीं होता ।

अन्धेरा सदा ही हानि, दुख और नाश का सूचक होता है और यदि यह कहा जाए कि अन्धेरे का दूसरा नाम हानि, दुख और विनाश ही है तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी ।

मै यहां अपने जीवन के ठोस अनुभव आपसे बांटना चाहता हूँ । देव समाज के केवल 2 – 3 कलास पढ़े ग्रामीण और सरल स्वभाव रखने वाले एक सन्त ने मुझे मेरा अन्धेरा दिखाया जबकि मैं पढ़ाई की डिगरीयां प्राप्त किए फिरता था । मैं उन्हीं घटनाओं का उल्लेख ही करूंगा जो उपरोक्त सन्त से सम्बन्धित हैं।

मैं 1949 के महोत्सव पर सेवक बन चुका था । उसके 4 – 5 वर्ष बाद मैं पहली बार विकासालय की संगत में गया था । मेरे साथ दो पढ़े लिखे मित्र भी थे । हमें धर्म – विकासालय के बाहर एक क्वाटर में ठहरा दिया गया । हम शाम का खाना खाने के बाद और सोने से पहले हंसी मख़ौल कर रहे थे । हम तीनों खाने पीने के शौकीन और रात को दूध पीने के लिए तैयार बैठे थे । हमने दूध के तीन बड़े गिलास भरकर सजाकर रखे हुए थे।

हमें उसके बाद कमरे में आने की कोई आशा नहीं थी, पर अपने आप हमारा पता लेने के लिए उक्त सन्त आ धमके और पूछने लगे कि हमें किसी चीज़ की आवश्यकता तो नहीं ।

मुझे सूझा कि बड़े मौके पर श्रीमान जी पधारे हैं, क्यों न मैं अपने हिस्से का दूध इनको पिलाने की खुशी प्राप्त करूं । वैसे भी मैं ही सबसे बड़ा था और मैं ही उन्हें जानता था । मेरे बाकी साथी समाज में किसी को नहीं जानते थे ।

श्रीमान जी ने फिर किसी चीज़ की ज़रूरत पूछी तो मैं खुशी – खुशी अपना दूध का गिलास पकड़कर उन्हें देने की कोशिश की और प्रार्थना की कि श्रीमान जी आप यह दूध पी लीजिए, उन्होंने कहा कि मैं दूध पीकर आया हूँ, यह आप पी लीजिए । मैंने फिर ज़ोर देकर कहा कि कृपा करके पी लें, परन्तु उन्होंने बार – 2 कहा कि मुझे

इसकी आवश्यकता नहीं, मैं आप लोगो से ताकतवर हूँ परन्तु मैंने उनकी एक बात न सुनी आखिर मेरा रुख देखकर उन्होंने वह दूध ले लिया, दूसरे दोनों साथियों ने अपना अपना गिलास पी लिया । श्रीमान जी हमें शुभ रात्री कहकर चले गए । मैं बहुत खुश होता रहा कि श्रीमान जी ने मेरा दूध पी लीया । मैं खुशी से भरा हुआ सो गया ।

उस समय समाज में ठीक सुबह 4 बजे घण्टा बजता था। घंटा सुनते ही सारे आश्रम के निवासी उठ जाते थे। Toilet जाते, साधन, पाठ विचार करते, सैर व्यायाम करते, मैं भी उठकर विकासालय की ओर चल पड़ा ताकि ताज़ा होने के नियम पूरे कर सकूं । और वहां मुझे उक्त श्रीमान जी भी मिल गए । मैंने उन्हें झुककर प्रणाम किया । वह मेरे निकट आकर थोड़ा रुक गए । उन्होंने कहा रात, मैंने सोचा कि अब वह मेरी प्रशंसा करेंगे । यह सोचकर खिल गया । श्रीमान जी ने अपनी बात पूरी करते हुए कहा बलदेव सिंह जी रात को जो आपने मुझे ज़ोर देकर दूध पिलाया , भाई लगता है कि तुम बड़े बिमार हो । बिमारी का नाम सुनकर मैं चौंक गया, मैंने कहा नहीं श्रीमान जी मैं तो बिल्कुल ठीक ठाक हूँ, बिल्कुल घोड़े की तरह तन्दरूस्त हूँ, उन्होंने कहा कि भाई तू शरीर का रोगी नहीं, आत्मा का रोगी है तेरे भीतर ''मैं'' का प्यार भरा पड़ा है। मेरी मर्ज़ी, मेरी इच्छा, मेरा सुख, मेरी खुशी का बढ़ा हुआ प्यार एक बड़ा भारी रोग है। इतना कुछ सुनकर भी मेरे पल्ले कुछ ज्यादा नहीं पड़ा , परन्तु जब उन्होंने विस्तार से समझाया कि ''मैं आपसे बड़ा था , आप छोटे थे । मैं दूध पी चुका था, मैं सेहत के लिहाज़ से भी आपसे ताकतवर था, फिर भी आपने मेरी एक नहीं सुनी, अपना आप ही ठीक लगा, वही किया जो आपको ठीक लगा ।'' तब मेरे दिमाग़ में कुछ घुसा कि श्रीमान जी किस बिमारी की बात कर रहे हैं। मुझे अपने ही सम्बन्ध में अन्धेरे की कुछ समझ आई। मुझे अपने वह कर्म जो मैंने आप मुहारे किए थे, कुछ सामने आए ।

एक मेरे बहुत पक्के मित्र थे । हम इकट्ठे कालिज में कई वर्ष एक साथ पढ़े, खेले, व्यायाम किए, दूध घी खाते रहे । बहुत कुछ जीवन में सांझ थी । साथ मिलकर ज़मीने खरीदी, इक्ट्ठे ही मिलकर जीवन व्यतीत करने के प्रोग्राम थे । उनकी शादी भी मैंने ही करवाई थी । जब श्रीमान जी ने उसे मेरे पास बार-बार आते जाते देखा तो श्रीमान जी ने उनके बारे में पूछा, मैंने कहा कि श्रीमान जी यह मेरे पक्के मित्र हैं । यदि ज़रूरत पड़े तो वह मेरे लिए जान तक कुर्बान कर सकते हैं । उस समय जो कुछ श्रीमान जी ने कहा वह सुनकर तो मेरे पैरों के नीचे से ज़मीन खिसक गई । उन्होंने फरमाया कि ''भाई जिसको आप अपना पक्का मित्र समझकर बैठे, वह तो पहले अपना ही मित्र नहीं, वह तो अपने आपका दुश्मन है, वह तुम्हारा मित्र कैसे हो गया।'' श्रीमान जी के शब्दों ने मेरे अन्धेरे कोने को रोशन कर दिया । यह मेरे लिए नई रोशनी थी । मनुष्य का अपना आप उसका सबसे बड़ा दुश्मन है। मनुष्य एक दूसरे के मित्र नहीं बन सकते जब तक वह नीच जीवन से पूर्ण मुक्त नहीं हो जाते ।

एक बार एक मन्दिर में उक्त श्रीमान जी नलके में से पानी भर रहे थे । मैं उनके लिए बाल्टी उठाकर स्वयं उनके लिए पानी भरने गया। मुझे पानी भरता देखकर श्रीमान जी ने कहा, भाई क्या कर रहे हो? मैंने अर्ज़ किया कि कुछ सेवा करता हूं । श्रीमान जी ने कहा कि सेवा नहीं, तुम कुछ काम कर रहे हो । इसी प्रकार उन्होंने पूछा कि यह उच्च गति है या नीच

गति है। उनके बताने पर पता लगा कि जिसे मैं सेवा समझता रहता हूं, वह अक्सर नीच गतियां ही होती हैं। कई बार तो हमारा सभा कराना, तकरीर, लैक्चर देना, प्रचार करना, भजन गाना, भजन लिखना, भाव प्रकाश करना यह कर्म नीच गति ही होते हैं, क्योंकि उपरोक्त सब कुछ हम ज्यादातर अहं, मान प्रशंसा के साथ ही प्रेरित होकर करते हैं, उन गतियों को करवाने में कोई उच्च भाव नहीं होते । उच्च भावों के पैदा होने वा विकसित हुए बिना हमारे दिखने वाले उच्च कारज, अक्सर नीच गतियां ही होती हैं, हम अपने नीच भावों की ही तृप्ति करते हैं। अन्धेरे में टक्करे ही मारते हैं। उनका कोई उच्च फल नहीं होता ।

बलदेव सिंह

नेचर में आत्मिक रक्षा और उन्नति का नियम

(देवात्मा का फरमान)

"आत्म तिमिर हर देव ज्योति मम,
आत्म प्रकाशक देव ज्योति मम,
चारों दिग वह परकीरण हो।
तिमिर से निकलें जन अधिकारी,
आत्म ज्ञान उनमें उत्पन्न हो।
आत्म रूप देखें अधिकारी,
सत्य धर्म का ज्ञान उत्पन्न हो।"

इस समय इस पद को दो बार गा कर मैंने अपनी यह शुभ कामना प्रकट की है कि अधिकारी आत्माओं तक मेरी देव ज्योति पहुंचे। उनके हृदयों के भीतर जो अन्धकार छाया हुआ है कि जिसके कारण वह अपने आपको नहीं जानते, उन तक देव ज्योति की किरणें पहुंचे, ताकि वह अपना आत्मिक रूप देख सकें। उन पर यह सचाई खुले कि उनका आत्मा क्या है और उस आत्मा में क्या रोग हैं, उन रोगों से उसकी क्या हानि है? मेरी यह आकांक्षा है कि तुम्हें देव ज्योति में अपने आत्मा का रूप और उसकी हानि दिखाई दे और उससे आगे तुम्हारे भीतर उस हानि से उद्धार पाने की आकांक्षा जागे। एक एक छोटे बच्चे को यह कुछ पता नहीं कि अफीम क्या होती है, उसको खाने से क्या हानि होती है? यदि कोई छोटा बच्चा अफीम खा जाता है, तो उसके बाप को उसका फिकर पैदा होता है। क्यों ऐसा होता है? इसलिए कि बाप को बच्चे के शरीर की हानि नज़र आती है। वह बच्चा खुद कुछ नहीं कहता कि मुझे डाक्टर के पास ले जाओ। क्यों? इसलिए कि उसे अफीम खाने में कुछ हानि नज़र ही नहीं आती। वह इस पहलू में पूरा बेहोश और अबोधी है। अब इस विषय में तुमने बाप और बेटे की अवस्था में अन्तर देखा – अर्थात बाप बोधी है और बेटा अबोधी है। अफीम के विष को बाप जानता है और बेटा नहीं जानता । अब इस प्रकार से उस अबोधी बच्चे ने अफीम को मिठाई समझकर खाया है, तो भी नेचर तुम को उन गतियों का बुरा फल अवश्य देगी । मैं चाहता हूं कि तुम लोगों के भीतर ज्योति पहुंचे और तुम्हें आत्मिक मृत्यु और ज़िदगी की ठीक सत्यता दिखाई दे और फिर इससे आगे तुम्हारे भीतर आत्मिक मृत्यु से बचने और आत्मिक जीवन वा कुशल लाभ करने का सच्चा भाव पैदा हो । तुम्हारे भीतर इस प्रकार की जाग्रति उत्पन्न हो कि मेरी आत्मा मर न जाए, यह रोगी न हो जाए । यह है पतन से निकलने की आकांक्षा । अब फर्ज़ करो कि कोई बच्चा विष खाने से बच गया, परन्तु उससे

आगे उसे अपने शरीर की रक्षा और पालना के लिए कोई आहार प्राप्त नहीं होता, तब भी वह बच्चा न बचेगा । यही नियम आत्मिक जीवन के संबंध में है कि वह एक ओर रोगों से बचे और दूसरी ओर उसमें उच्च भाव वा उच्च शक्तियों उत्पन्न हों । यह आवश्यक नहीं कि रोगी ही मरता है, बल्कि जो रोगी न हो किन्तु लगातार आहार से वंचित रहे, वह भी धीरे–धीरे मरता जाता है। तब नितान्त आवश्यक है कि तुम्हारे भीतर एक ओर यह आकांक्षा हो कि मेरी उच्च गति हो, विकाश हो और दूसरी ओर यह आकांक्षा हो कि मेरे द्वारा औरों का विकाश हो । नेचर में आत्मिक रक्षा और उन्नति का नियम यही है। बच्चे यदि हर समय गोद में चढ़े रहें, तो उन में बल कुछ भी नहीं आएगा । आत्मा का भी यही हाल है कि जब जक वह अपने आप को औरों के भले में न लगावे तब तक उसका अपना भला होता ही नहीं । यदि कोई कहे कि मैं अपने आप में ही मस्त रहूं और मेरा भला हो जाएगा, तो नेचर उसे कहती है कि ऐ अंधकारग्रस्त जीव! ऐसा नहीं होता और नहीं हो सकता। काश! कि मनुष्यों की यह बोध हो कि हम रोगी हैं, हम में यह बोध उत्पन्न हो कि हम रोग से निकल आवें, हमें कुशल प्राप्त हो । एक–एक पढ़ा लिखा बी० ए० और एम० ए० भी आत्मा के विचार से अंधा है । किसी जन के हाथ, पाओं और दिमाग बहुत अच्छे हैं, इसलिए वह आत्मा के सम्बन्ध में भी अवश्य रौशन हालत में है, ऐसा कोई नियम नहीं है। क्या बैल और गधे में भी यही बात नहीं पाई जाती है कि बैल के सींग मारने से दूसरा गिर जाता है, परन्तु वह यह कहां जान सकता है कि मैं रोगी (कमज़ोर) हूं और मुझे इस रोग से निकलने की आवश्यकता है। यह बात कौन नहीं जानता कि इस पृथ्वी में अच्छे शरीर और दिमाग वाले जन वर्तमान हैं, फिर भी उनमें व्यभिचारी भरे हुए है, ठगों और डाकुओं की भरमार है। इसलिए आवश्यकता है कि उनमें ऐसी रोशनी आ जावे जो आत्मिक सत्यता को दिखा दे । एक मैजिस्ट्रेट दिमाग के द्वारा यह जान कर भी कि रिश्वत लेना खराब है, फिर भी वह आप रिश्वत लेता है। जैसे उपरोक्त बाप को हम इस बात के लिए बेचैन देखते हैं कि किसी प्रकार उसका बच्चा बच जावे, उसने जो विष खाया है, वह किसी प्रकार से निकल जावे । वैसे ही किसी जन को अपने आत्मा के बचाने के लिए बेचैन कहां पाते हैं? आत्मा प्रत्येक जन के अस्तित्व में मूल वस्तु है। इसलिए उस आत्मा का यदि कोई मनुष्य बोधी न हो सके, तो वह बड़ा ही अभागा है और इसके विरूद्ध यदि आत्मा का कोई बोधी बन सके, तो वह बड़ा सौभाग्यवान है। ऐसा हो कि तुम लोग इस सौभाग्य को अधिक से अधिक लाभ कर सको ।

हमारे आदमियों में यह बात आनी चाहिए कि वह किसी गल्ती के हो जाने पर उसे स्वीकार कर सकें। यह बात किसी जन के अच्छे जीवन की पहली मंज़िल है। वह जन किसी काम का नहीं जो अपनी अवज्ञा को स्वीकार न कर सके। वह एक पशु से भी खराब है। यदि हम अपनी घोड़ी को यह कहें कि तुम अड़ी की उसके एक दो हंटर भी लगादें, तो वह चुप रहती है, कुछ नहीं बोलती। परन्तु मनुष्य यदि आगे से यह कहना शुरू करे कि मैंने तो वह अपराध नहीं किया, टोके जाने पर आगे से बुड़बुड़ करना शुरू करे, तो वह चाहे कितना भी पढ़ा लिखा हो, कालर, नकटाई लगाता हो, कोई स्त्री चाहे कतिनी भी कीमती साड़ियां पहनती हो, शक्ल सूरत के विचार से कितनी भी सुन्दर हो, वह सब वजूद कौड़ी काम के नहीं हैं। उनके जीवन का दूसरों पर कोई भला असर नहीं पड़ेगा? एक एक बैल भी सुन्दर कपड़ों वा आभूषणें से सजाया जा सकता है। इसमें कौन सी बड़ी बात है? परन्तु वह जन श्रेष्ठ है, जो अपनी अवज्ञा को स्वीकार करे और उसके लिए क्षमाप्रार्थना करें।

कल्याण सत्संग वा माता पिता सन्तान दिवस

पिछले वर्षो की तरह इस वर्ष भी कल्याण में सत्संग वा माता पिता सन्तान दिवस 12 फरवरी से 15 फरवरी तक धूम धाम से मनाया गया । वहां पर रहने सहने वा खाना आदि का प्रबन्ध लोकल सेवकों द्वारा श्रीमान बलबहादुर सिंह जी वा बलजीत जी की निगरानी में किया गया इस सत्संग में शामिल होने के लिए चण्डीगढ़, दड़बा, मौड़ा, संगरूर, लखनऊ, मेरठ, पदमपुर, गंगानगर, गजसिंह पुरा, केसूपुरा, मल्लेका, लुधियाना, भटिंडा, कपूरथला, अम्बाला, गोनियाना मंडी, जंडवाला, महिमा सवाई, देहरादून आदि से 70–75 के लगभग जन पहुंचे, सभाएं श्रीमान बलबहादुर सिंह जी वा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने करवाई । केसूपुरा से प्रिंसीपल सरताज सिंह जी 20–22 जनों के साथ आए जिनमें 2–3 अध्यापिकाऐ भी थी । उन्होंने स्वयं सफाई वा झाड़ू आदि लगाने की सेवा की । श्रीमान बूटा सिंह जी और प्रदीप जी भी बहुत सेवाकारी होते रहे।

कल्याण देव समाज मन्दिर के प्रेाग्राम के अनुसार सत्संग का शुभ आरम्भ शाम की प्रवेश सभा के साथ 7.30 पर शुरू हुआ । सभापति श्रीमान बल बहादुर जी ने सत्संग पर पधारने वालों का तह दिल से स्वागत किया ।

श्रीमान जी ने फरमाया कि आने वाले जन बहुत सौभाग्यवान है जो इस मुबारक स्थान पर आए हैं यहां पर बहुत बड़े तपस्वियों ने तपस्या की । यहां पर सच्चे धर्म की शिक्षा दी जाती है। सभापति जी ने आगे फरमाया कि यहां धर्म नहीं होता वहा पाप व मिथ्याचार पनपता है । बुराई पनपती है। जाप, कीर्तन आदि करने से धर्म नहीं आता वह सब करते हुए भी मनुष्य पाप क्यों करता है क्योंकि उसे सच्चे धर्म का ज्ञान नहीं । भगवान हमें सच्चे धर्म का ज्ञान देते है यहां सच्चा धर्म होगा, वहां मिथ्या और पाप नहीं होगा, परस्पर सम्बन्ध मधुर बनेंगे । बुराईयां छूट जाएंगी और मनुष्य बेहतर और अच्छा इन्सान बन जाएगा। इसके पश्चात श्रीमान बलदेव सिंह जी ने ब्यान किया कि भगवान इस संसार में भलाई और सच्चाई लाने के लिए व्याकुल हैं। मनुष्यों में पापों की आग लगी हुई है उसको बुझाने के लिए तड़प रहे हैं । उनका सच्चाई और भलाई में इश्क उन्हें मनुष्य को पाप जीवन से निकालने में मजबूर करता है। श्रीमान जी ने आगे फरमाया कि मनुष्य नीच असरों में रहते हुए नीच बन जाता है और उच्च भावों के असरों से अच्छा बनता जाता है। जब तक हमें देव प्रभाव मिलते रहेंगे हम उच्च बनते जाऐंगे । नेचर के विकास क्रम में उच्च जीवन पाने के लिये भगवान की शरण में जाना जरूरी है उसके बिना हमारा नीच जीवन से उद्धार नहीं हो सकता । हम अपने जीवन में उच्च परिवर्तन ला सकें यही हम सब भगवान के दर पर प्रार्थना करें ।

13/02/2015 9.30 बजे : की सभा श्रीमान बलदेव सिंह जी ने कराई दो भजनों– जीवन ज्योति के तुम सूर्य अन्धेरा दूर करते हो और मेरे भगवन तुम्हारे बिन कहां मेरा ठिकाना है – का गान किया गया उसके बाद ''धर्म की जरूरत क्यों है'' के विषय की विस्तार और सरल तरीके से व्याख्या की । उन्होंने बताया कि मनुष्य दो बातों से – यानि मौत और दुःख से बहुत डरता है वह उससे बचना चाहता है वह मरना नहीं चाहता और दुःखी रहना नहीं चाहता । इसके लिये मिथ्या धर्मो के भिन्न प्रकार के तरीके व क्रियाऐं जैसे की नाम जपना

किसी नदी आदि में स्नान करने कोई खास पूजा करने से उसे इन सबसे मुक्ति मिल जाएगी आदि – 2 । जोकि बिल्कुल झूठ वा मिथ्या है। आजकल के धर्मवान कहलाने वाले सुखी नहीं हैं। वास्तव में अच्छा इनसान बनना ही धर्मवान बनना है। जैसे – 2 वह दूसरों के लिए कुछ अच्छा काम करता जाएगा, धर्मवान बनता जाएगा। लेकिन उससे पहले उसे बुराई से छुटकारा पाना जरूरी है । यह तो धर्म जीवन पाने की शुरूआत है। सभापति जी ने बताया कि मोटे – मोटे 8 पापों से छुटकारा पाना धर्म जीवन पाने की पहली सीढ़ी है। उन्होंने आगे फरमाया कि मिथ्या विश्वास लोगों को दुःख की तरफ ले जाते हैं इनसे मनुष्य की भलाई नहीं होती और दूसरी बात जो मनुष्य को बर्बाद करती है वह है उसके नीच अनुराग । इन दोनों से निकलने व बचने की जरूरत है । सच्चाई वा भलाई से ही मिथ्या विश्वास दूर हो सकते हैं।

देव समाज में आने से हमारे मिथ्या विश्वास चले जाते हैं । जो अच्छा इन्सान वा धर्मवान बनने के लिए जरूरी है।

1) हर पहलू में इमानदार बनना – रिश्तों में, लेन – देन में व्यवहार आदि – 2

2) अपने स्वार्थ से छुटकारा पाना

3) दयावान बनना

4) भले मनुष्यों की पहचान आना, उच्च जीवनधारी के गुणों को देखने की आँख रखना

5) अपने रिश्तों में दूसरों के गुणों को देखने की आंख रखना और उनका अनुकरण करना ।

अगर मनुष्य इन सब गुणों को अपने अन्दर पैदा करता है तो वह धर्मवान बनता जायेगा और सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है नहीं तो मनुष्य बर्बाद होता जायेगा ।

13 / 02 / 2015 3:00 बजे : आज की दूसरी सभा में सभापति श्रीमान बलबहादुर जी ने फरमाया कि हमारे मिथ्या विश्वास जाने से हम दिमागी तौर पर स्वतन्त्र हो जाते हैं। यह कोई साधारण बात नहीं है घटनाऐं बता कर श्रीमान जी ने मिथ्या विश्वासों द्वारा पैदा हुई भयानक तस्वीर दिखाई जिनके द्वारा मनुष्य तबाह और बर्बाद हो रहा है।

देव समाज की शिक्षा हमें सब मिथ्याओं से बचाती हैं और हमारी रक्षा होती है। हमारी सेहत बन जाती है, हमारा धन बच जाता है, बिमारियों से हमारी रक्षा होती है, नीच विचारों व नीच अनुरागों से मुक्ति मिल जाती है। देव समाज में सेवकों के जीवनों में आए परिवर्तन बताकर समझाया कि कैसे – 2 उनका हर पहलू में भला हुआ । और दूसरों के भरोसे के लायक व सेवाकारी बन गये । श्रीमान जी ने आगे फरमाया कि धर्म सम्बन्धों में हैं। धर्मजीवन पाने से हमारे सम्बन्धों में मेल आता है और वह मधुर बन जाते हैं। दूसरों से हमारे सम्बन्ध दर्शाते हैं कि हम कितने धर्मवान बन गये हैं या नहीं । यहां आकर हमें अपने पाप नजर आते हैं हमारे दिमाग के ताले खुल जाते हैं और उन पापों से निकलने के लिये हमें प्रेरणा व बल मिलता है । हमें दूसरों की सेवा व गुण नजर आने लगते हैं और दूसरों के लिये हितकर बनने लगते हैं।

13 / 02 / 2015 7:30 बजे : आज शाम की सभा में सभापति श्रीमान बल बहादूर ने फरमाया कि हमारी गतियां इतनी पिशाचक हैं कि धर्म के नाम पर हम दूसरों का खून करते हैं। उन्होंने पेशावर के स्कूल के बच्चों का जिहाद के नाम पर हुए कत्ल का उदाहरण दिया । उन्होंने फरमाया कि यहां धर्म है वहां दया का

भाव होता है। बर्नार्ड शा के शब्दों को दोहराते हुए उन्होंने फरमाया कि जब तक मनुष्य जानवरों की कबर अपने पेट में बनाता रहेगा तब तक वह सुख और शांति से नहीं रह सकता चाहे कितनी भी शांति की Conference वा गोष्टीयां कर ले । नेचर का नियम है घृणा वा हिंसा करोगे तो घृणा व हिंसा ही अपने प्रति पाओगे । मनुष्य का हिंसक व घृणा कारी स्वभाव ही उसकी नीच क्रियाओं का कारण है। धर्म का काम है ईर्षा को कम करना, उदारता पैदा करना व बढ़ाना । अगर यह नहीं होता तो वह धर्म नहीं है। ईर्षा की आग में हम जल उठते हैं और दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं और साथ-2 में अपने शरीर वा आत्मा का नुकसान करते हैं। जब तक मनुष्य को अपने पाप नज़र नहीं आते और उनसे उसे दुःख व घृणा पैदा नहीं होती तब तक उसका भला नहीं हो सकता । वह धर्मवान नहीं बन सकता । मनुष्य जितना अपनी कमियों व जिम्मेवारियों को पहचानता जाएगा उतना उसका विकास होता जाएगा । जितना अपनी जिम्मेवारियों को इमानदारी से पूरा करता जाएगा उतना ही वह धर्मवान बनता जाऐगा ।

14/02/2015 9.30 बजे : सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि मनुष्य को उच्च जीवन पाने के लिये उसमें कृतज्ञता का भाव होना बहुत जरूरी है। हमें जब तक यह महसूस नहीं होता कि हमारा वजूद दूसरों की मेहरबानियों और कृपा व सेवा का नतीजा है और यह हमें कर्ज की महसूस नहीं होता तब तक हम धर्म जीवन में आगे नहीं बढ़ सकते । हमें अपने उपकारियों के प्रति कृतज्ञता का भाव पैदा करना बहुत जरूरी है। हमारे माता पिता से लेकर, मनुष्य जगत वा पशुजगत, वनस्पति जगत और भौतिक जगत के असंख्य उपकार हैं इनके बिना हमारी कोई हस्ती नहीं है। कोई ऐसा पल नहीं जब हम पर इन चारों जगतों की कृपा न रही हो ।

उनको महसूस करके उनके प्रति कृतज्ञता के भाव के साथ कुछ प्रति उपकार करें तो हम धर्म जीवन में आगे बढ़ सकते हैं और धर्मवान बन सकते हैं वा अच्छे इन्सान बन सकते हैं। हम पूर्ण निष्काम भाव से दूसरों की सेवा करें और अपना विकास करते जाएं ।

14/02/2015 3.00 बजे : दोपहर की सभा के सभापति श्रीमान बल बहादुर जी ने फरमाया कि धर्म का बोध व ज्ञान पाने के लिये ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिये जिसमें मिथ्या न हो जो सरल हो और सत्य पर आधारित हो, वैज्ञानिक विधि पर पूरी उतरती हो । सभापति जी ने फरमाया कि आज कल प्रचलित बह्मवाद वा ईश्वरवाद के धर्मों ने मनुष्य का बहुत नुकसान किया है । इन विचारधारा ने मनुष्य को जैसे पाप जीवन जीने को खुली छूट दे रखी है। उसके अनुसार मनुष्य के कोई भी पाप करने पर उस पर को दोष नहीं लगता । जप, पूजा स्नान आदि करने से या किसी के प्रति आस्था रखने से वह सब पापों से मुक्त हो जाता है । कैसी भयानक शिक्षा है भगवान देवात्मा की शिक्षा ने बताया है कि हमारा अस्तित्व दूसरों की देन है हम अगर पानी को नशीला बनाते हैं तो आत्मघात कर रहे हैं। इस सम्बन्ध के तत्व के ज्ञान के बिना हमें दूसरों के लिये हानिकारक बनना लाजमी है। जब हम दूसरों की मदद नहीं करते तब हम अच्छे इन्सान नहीं बन सकते । हमारे माता पिता का हमारे साथ जीवन दाता का सम्बन्ध है। उनकी सेवा व सम्मान करना हमारा परम कर्तव्य है। हमें अपने घरों से धर्म जीवन की शुरूआत करनी है । हमें अपने घरों से ही धर्म जीवन में प्रवेश हो सकता है। पशु और वनस्पति जगत के साथ भी हमारा घनिष्ट सम्बन्ध है और इसे

महसूस करने की जरूरत है। अगर हम निस्वार्थ भाव से सेवा नहीं करते तो हम सेवक कहलाने के लायक नहीं है। हमें अपने सम्बन्धियों के उपकारों को देखने की जरूरत है। और उनके प्रति कृतज्ञ महसूस करने की जरूरत है। और उनकी सेवा किए बिना हम धर्म जीवन में प्रवेश नही पा सकते। भगवान हमें नीच जीवन से निकाल कर एक सुन्दर और सार्थक जीवन में प्रवेश कराते हैं। उनके सम्बन्धों की शिक्षा अतुल्य है काश! हम उनकी देव वाणी को समझ सकें और उनके बताए हुऐ रास्ते पर चल सकें और सच्चे सेवक बन सकें ।

14/02/2015 7:30 बजे : शाम की सभा के सभापति श्रीमान बल बहादुर जी ने फरमाया कि हमारे सुखों के प्रति गहरे अनुराग हैं नीच सुख अनुराग बहुत हैं और उच्च सुख अनुराग कोई एक है या वह भी नहीं है। सभापति जी ने आगे फरमाया कि हम सुखों के दास हैं और उनसे पार पाना हमारे बस में नहीं है। यह हमारी प्रवृति का हिस्सा है यह हमारा नाश करने वाले बन जाते हैं। स्वाद अनुराग हामारी सेहत तबाह कर देते हैं किसी को धन का, काम का, सन्तान का, यश का पदवी का अनुराग है । और इन पहलुओं से अपना व दूसरों का नुकसान किये बिना नही रह सकता । मनुष्य दुर्बल है उन नीच अनुरागों से छुटकारा पाना उसके बस में नहीं है। हालाकि उनसे छुटकारा पाना उसका लक्ष्य होना चाहिये इनसे छुटकारा पाए बिना उसका धर्म जीवन में प्रवेश नहीं हो सकता और न ही आगे उसका विकास हो सकता है। इनसे छुटकारा पाने के लिये उसे देवज्योति की जरूरत है देव प्रभावों की जरूरत है। भगवान की शिक्षा सत्य और शुभ पर आधारित है वह विज्ञानमूलक है। नीच अनुराग व उनसे छुटकारा पाने की शिक्षा किसी भी धर्म में नहीं पढ़ाई जाती । धर्म का काम है नीच भावों को दिखाना और उनसे मुक्ति पाना । वही असली धर्म है। जब सच्चे धर्म की पहचान हो जायेगी तो हम अपनी कमियों पर बार-2 रोएंगें । देव आत्मा की ज्योति जब हमें मिल जाएगी तो हमें सच्चा धर्म मिल जाएगा और हमारा जीवन सफल हो जाएगा । इसके आगे श्रीमान बलदेव सिंह जी ने फरमाया कि मनुष्य जीवन की सबसे बड़ी समस्या यह है कि उसके नीच सुख अनुराग उसे नीच जीवन जीने के लिए मजबूर करते हैं वह उनके सामने बेबस है। और मनुष्य अपना नुकसान करने के लिये बाधित है उसका नुकसान होना लाजमी है । लेकिन वह इसको महसूस ही नही करता । और पागल की तरह अपनी हानि से बेफिकर हो कर जीवन व्यतीत करता है और उन्ही में अपनी खुशी को ढूंढता रहता है। जीवन के लिहाज से वह अन्धा है। कोई भी पूजा पाठ हमारे अन्दर छुपे बैठे हुऐ नीच अनुराग को नही दिखा सकता । यह केवल भगवान देवात्मा की देव ज्योति में ही दिखाई दे सकते हैं और उनसे बचने का रास्ता भी दिखाई देता है।

15/02/2914 सुबह 9 बजे विशेष सभा : सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी माता-पिता -सन्तान के सम्बन्ध में विशेष सभा भजन के गान वा देव स्तोत्र के गान व व्याख्या के बाद, सभापति जी ने हृदय-गत भावों से प्रार्थना की । फिर जगदीश जी ने ''श्रद्धा भाजन माता-पिता जी'' नामक भजन का भाव पूर्ण गान किया ।

सभापति जी ने बताया कि हम इन्सान कहलाते हैं, परन्तु हम पशु जगत से विकसित हुए हैं, इसलिए हमारे भीतर पशु प्रकृति है। हमें सम्बन्धों में जीना नही आया । उच्च भावों अर्थात श्रद्धा, कृतज्ञता, हमदर्दी पैदा होने से दुनियां में सम्बन्धों में स्वर्ग आएगा । जितने उच्च भाव हैं, उतने ही हम इन्सान हैं, बाकी तो हम हैवान हैं।

पश्चिमी सभ्यता में बच्चे इतना भी सम्बन्ध नहीं रखते कि उन्हें पता हो कि माता पिता कहां है। किस हाल में है। ओल्ड होमज़ में छोड़कर सन्तुष्ट हैं। पू० भगवान सम्बन्धों में उच्च मेल पैदा करते हैं। एक सेवक से सैर पर जाने से पहले गुरू महाराज ने पूछा कि आप प्रणाम तो अपने माता पिता को करते ही होंगे ? उनके न कहने पर वह तड़प उठे और उन्हें सैर पर ले जाने से मना कर दिया । अभी भी माता-पिता के सम्बन्ध में बर्बरी अवस्था है । कितने तपस्वी धर्म कमाने के लिए माता पिता को छोड़कर जंगलों में चले गए ।

हमें माता-पिता को जी कहना सिखाया है। माता पिता के उपकारों को गिना नही जा सकता । कठोरता, निर्लज्जता इतनी है कि बच्चे कहते हैं कि आपने हमारे लिए क्या किया है? हमें अगर विरासत में सुन्दर शरीर मिला, बलिष्ट शरीर मिला है, निरोग शरीर मिला है, तो यह माता पिता की देन हैं । परन्तु उनकी देन पर उनका उपकार मानने की बजाए हम घमंड से भरे रहते हैं । माता पिता का जन्म दाता, पालन कर्ता, रक्षा कर्ता, शिक्षा दाता रूप हमें सदा उनका ऋणी बनाता है। एक-2 बाप अपने बच्चे के ईलाज के लिए डाक्टर के घर में नौकर का काम करता है। मेरी मां जी Police Inspector की पुत्री थी, और Honorary Megistrate की पोती थी, उसने हमें पालने के लिए पशु रखे, उनका चारा लाती, गोबर उठाती, अपना आप भूलकर उन्होंने हमें पाला । विरासत में सुन्दर शरीर, दिल, दिमाग दिया । चौहान जी बड़े धावक है, यह भी माता पिता का दान है। इब्राहिम लिंकन ने कहा था, मैं जो कुछ भी हूं और बनने की आशा करता हूं, उसका सेहरा मेरी कृपालु मां के सिर पर है। हज़रत मुहम्मद कहते हैं कि माता के चरणों में जन्नत होती है। गुरू महाराज ने नाशुकरे, भेड़िया बच्चों को माता पिता के लिए कृतज्ञ बनाया है। माता पिता के साथ सम्बन्ध सन्मान, श्रद्धा, कृतज्ञता वा हमदर्दी का बनाया है। एक-2 पुत्र जो यह कहता था कि गीता का अध्याय एक और पढ़ लू, पर मां तेरे को सीधा कर दूंगा , उससे माता पिता की वह सेवा करवाई कि सेवा के रिकार्ड तोड़ दिए । श्रीमान गुरूबख्श सिंह जी ने दादी जी की सेवा की। तहसीलदार भाई अतर सिंह जी ने किस प्रकार अपनी मां के पैर धोकर सफेद पगड़ी से साफ किए ।

यह सभा बहुत भी प्रभावशाली थी -जगदीष जी ने ''माँ प्यारी माँ'' का भजन गाया।

भाव प्रकाश

गोपाल जी : इस दर की बहुत कृपा महसूस हो रही है इस दर पर आकर ये कृपा हुई कि मैं माता-पिता के प्रति कोई विरोधी भाव नहीं रखता। उनसे लड़ नही रहा, उन पर बोझ नही बन रहा हूँ परन्तु वैसे जब मैं उनके लिए सेवाकारी नहीं हूँ, उसके प्रति वह श्रद्धा नहीं है, शुक्रगुजारी नहीं है जैसा गुरू महाराज बताते हैं।

सभी संगे सम्बन्धी ये देखते हैं व सोचते हैं कि हम तीनों बाप-बेटा-दादा इकट्ठे आते हैं परन्तु हमारे परिवार का ये हाल था कि हमारे परिवार आपस में कोई बोलचाल नहीं रखते थे सभी एक दूसरे के दिलों से बहुत दूर थे और एक दूसरे के लिए बद्दुआ करते थे । गुरू का दर मिलने के बाद वह मन की गन्दगी हमारे से काफी निकल गई । परन्तु जैसा कि बताया गया है कि इसके आगे का विकास हमारी सुख-परायण प्रकृति के कारण और नीच भावों के कारण रुका हुआ है। मेरी प्रकृति भी बड़ी नीच है तभी तो माता-पिता का वह रूप नहीं दिखता जो गुरू-महाराज पुकार-पुकार के फरमाते हैं। मेरे पिताजी से मैं किसी समय छोटी-छोटी बातों पर

उलझता रहा हूँ उनकी कद्र नही करता था, गुरू–दर पर आने पर भी उनका सबसे बड़ा योगदान है परन्तु मैं नाशुक्रा उनकी उतनी कद्र नही कर सकता । मेरी माता जी की भी मैं इच्छाओं का सम्मान नहीं कर सका मैं बहुत नाशुक्रा हूँ मैं इस दर से और प्रभावों की भीख माँगता हूँ ।

श्रीमान बल बहादुर सिंह जी :– मुझे पढ़ लिखकर भी माता पिता का रूप नज़र नही आता था । वह सीधे साधे थे। इस संगत में आकर उनकी ईमानदारी, हमदर्दी, प्यार, कुर्बानी और मेहनत नज़र आने लगी । उनकी उंगलियों से बहता खून काम करते समय नज़र आने लग गया। मैं उनकी पाक कमाई को फजूल बर्बाद करके पापी बनता रहा । गुरू महाराज ने उनके असल रूप को दिखाया है। उनके श्री चरणों में झुकाया है। पिता जी ने जिस प्रकार मेरे दादा जी की सेवा की । उन्होंने अन्धी पुत्रहीन नानी जी की उच्च भावों से भरकर सेवा की । यह एक बंहद सुन्दर उदाहरण है। अपने भाई को साधू बनने से रोका । उनकी बहुत बड़ी जायदाद का कोई रती भर भी लालच नहीं किया, उल्टा उनका घर बसाकर कमाल का हृदय पैदा किया । बावजूद मेरे दादा जी के मना करने के, मुझे पढ़ाने में खर्च किया, एक बहुत श्रद्धावान, आज्ञाकरी पुत्र होकर भी अपने पिता जी की यह बात नहीं मानी । मैंने जो माता पिता को दुःख दिया, वह याद आकर दुखी करते हैं (रो रोकर) अब उनके सब बच्चों की सेवा करके वह पाप धोने का यत्न करता हूं ।

श्रीमान श्रेष्ट कुमार अरोड़ा :– मैं समाज के परिवार में पैदा हुआ । मुझे बहुत बरकतें नसीब हुई हैं। मेरे पिता जी सब इन्कम टैक्स देते हैं । सारी आमदन लिखते थे तथा बहुत ही ईमानदार थे। मेरे गले की हडडी टूट गई जब मैं 10 वर्ष का था । मुझे वह कन्धे पर उठाकर तीन किलोमीटर तक लेकर गए । वहां मेरी हड्डी चढ़ाई । वह बहुत मेहनती और कुर्बानी देने पर विश्वास करने वाले थे।

भगवान की शिक्षा बेहद कमाल की है। पाठ विचार करता हूं । परन्तु क्षमा मांगने के सम्बन्ध में फेल हो गया । पूरा नहीं उतरा । कमी रही है। आत्मा की हानि से बचने की कोशिश करता हूं ।

एक विधवा मां ने किस प्रकार हितकर सेवा और त्याग और अनुशासन करके किस प्रकार अपने बेटे को कलकत्ता हाईकोर्ट में चीफ जस्टिस बनाया, उसका सुन्दर उदाहरण बताया । बच्चे को पेटू नहीं बनने दिया रोने पर भी आम खाने को नहीं दिया । लालची नहीं बनने दिया । काश! मैं भी एक अच्छा पिता बन सकूं ।

माता पिता का रूप एक सुन्दर फलदार पेड़ जैसा हैं । माता पिता हम पर सब कुछ लुटा देते हैं। माता–पिता सिर्फ कुछ समय चाहते हैं कि हम उनके पास बैठकर attend करें । उनकी केवल यही मांग है।

यहां के सुन्दर वातावरण में आकर बहुत लाभ हुआ हैं बहुत धन्य–धन्य हुआ हूं ।

श्रीमान गुरूदेव राज जी केसूपुरा :– इस सभा में बैठकर माता–पिता के गुण और उपकार नज़र आए हैं। पहले मुझ अन्धे को कुछ भी नज़र नहीं आता था । एक बार मां के साथ लड़ पड़ा था । मां को पागल समझता था । मां का पवित्र, सादा, ईमानदारी, मेहनत भरा जीवन दिखाई देने लग पड़ा है । उनकी मेहरबानियां नज़र आई हैं । पाकिस्तान से उजड़ कर आते समय जब रोटी के लाले पड़े हुए थे, भुखे रहना पड़ता था । उस समय मेहनत मजदूरी करके हमें पाला है। मां ने, ताई जी

ने स्वयं धान की फसल सारा सारा दिन खर्च करके, पैदा करके मुझे और मेरे भाई को पाला, पढ़ाया । मैं अन्धा उन्हें पागल तक कह देता था । (रो रोकर) माता 75 वर्ष की हैं। अब भी सारा दिन बहुत काम करती हैं। मैं 25 वर्ष उन्हें पागल समझता रहा । 2000 सन में आकर मैने पहली सभा सुनी थी, उस दिन से हर रोज़ माता पिता जी के चरणों में सिर रखकर प्रणाम करता हूं ।

श्रीमान रजिन्द्र जी देहरादून :– मैं दारू बीड़ी पीता था । पागलों के समान था । मुझे कुछ पता नहीं था कि माता पिता क्या होते हैं। इस दर पर आकर समझ आने लगा कि माता पिता क्या होते है। उसने बहुत सुन्दर भजन गाकर, गुरू महाराज का धन्यवाद दिया। ''माता पिता तुम मेरे भगवन, तुमने मुझे बचाया ।'' मैं बहुत नीच था । मैं उजड़ा हुआ था । बर्बाद हो रहा था । मैं कारोबार के फैलाने में लाखों रुपये का कर्ज़दार हूं । मैं जल्दी से जल्दी सबका कर्ज़ उतारना चाहता हूं । नये जनों से बेनती करता हूं कि वह इस दर के साथ जुड़ जाएं। ऐसा दर दुनियां में कहीं नहीं मिलता। महोत्सव पर रोशनी करने का फख़र हासिल करूंगा ।

श्री महाराज सिंह मेंरठ :– मैं जब पहले बड़ी संगत में आया था । उसी वक्त से नशे, बीड़ी, मासाहार आदि को छोड़ा हैं । मैं उन पर पक्का हूं । अब इन को हमेशा–हमेशा के लिए छोड़ सकूँ, यह मैं प्रण करता हूं ।

श्री रूप सिंह जी, मौड़ा (संगरूर) मैं महोत्सव पर आकर 42 दिनों के लिएए नशे छोड़े थे। अब मैं हमेशा के लिए छोड़ता हूं । आगे से कभी नशा नहीं करूंगा ।

श्री कंवर पाल सिंह जी मेरठ :– मैं एक महीने के लिए बीड़ी सिगरेट छोड़ता हूं । और कोई नशा नहीं करता, मासाहार भी नहीं करता ।

श्री प्रेम राज जी :– मैं भी एक महीने के लिए नशे और मासाहार को छोड़ता हूं ।

श्री रोहित जी :– मैं हमेशा के लिए नशे वा मासाहार छोड़ता हूं । बहुत सारे जनों के सत्संग में आकर लाभ उठाने के लिए हाथ खड़े किए ।

डा० जयरथ जी :– मैं यहां खड़ा होकर यह कहना चाहता हूं कि इस दर पर आकर मै क्या से क्या बन गया । मेरे पिता महाराज में काले पाली के अन्दर 1910 में पैदा हुए । उन्होंने बड़े ही उच्च नियमों का पालन किया । बड़ा संग्राम किया । हम चारों भाईयों को बहुत योग्य बनाया । दादा जी हमारी दादी जी को बहुत ज़ोर देकर यह कह गए थे कि बच्चों को ज़रूर पढाना हैं। दादी जी विधवा हो गई थी । पिता जी चौथी जमात तक गांव के स्कूल में खूब पढ़े । फिर उच्च लोकवासी श्रद्धेय श्रीमान मेवा सिंह जी मेरे पिता जी को मोगा ले गए और वहां स्कूल में दाखिला करवा दिया । दादी जी 2 रूपये महीना ही दे सकती थी । दादी जी गांव से मोगा पैदल ही जाती, तो उन्हें किराया न लगाना पड़े । बचत करके अपने बेटे को पढ़ाया । पिता जी पढ़ाई में बहुत मेहनत करके फस्ट आते । नौवीं में पढ़ते हुए और आठवीं में बहुत मेहनत करके फस्ट आए । नौवीं में पढ़ते हुए और आठवीं के बच्चों की टियुशन लेते । फिर पिता जी ने पांचों बहन भाइयों को खूब पढ़ाया । सारे कलास वन अफसर बनें । मैं डाक्टर बन सका । बहुत संस्कार दिए । पिता जी पक्के ईमानदार थे। पिता जी को गुरू महाराज की पैदा संगत, समाज मिल गई । वह डियूटी के पक्के थे । जहां काम करते वहां पूरी

जिम्मेवारी से करते । बड़े हस्पताल का सारा अकाऊंट उनके हाथ में था । वह बड़े प्रलोभनों में कभी नहीं डोले । एक आयरलैंड का बड़ा डाक्टर उस हस्पताल का मैनेजर था । उसने कहा था कि यह पहला इंडियन देखा है जो पूर्ण रूप से ईमानदार है। उन्होंने यह भी कहा कि मुझे शक है उसकी जगह पर ऐसी आदमी मिलना कठिन है। पिता जी के बाद उसी काम पर उन्हें सात आदमी लगाने पड़े । सबको ही पिता जी से भले संस्कार मिले । मेरी माता जी बहुत पढ़ी लिखी थीं। दिल्ली के अच्छे परिवार से थी। उन्हें गावों में बिना सब सहूलतों के रहना पड़ा । माता जी रतन, भूषण और मैट्रिक पास थी और पढ़ाती भी थी । सबसे बड़ा उपकार है पिता जी हमें दव समाज से जोड़ गए । जिससे हमारा बहुत भला हुआ हैं।

श्रीमान मधूसूदन जी :– यहां आकर मैंने बहुत खुशी महसूस की है। उपकारी नज़र आए हैं। माता जी, विनीत बहन जी और शशी जी खेड़ा सबके उपकार नज़र आए हैं। उन्होंने मां की तरह मुझे सम्भाला । मां कि सेवाएं भी नज़र आई हैं। मैं बहुत ही बिमार हो गया था। मै मरने वाला था । मां ने जिस प्रकार सेवा की, उसका मैं ब्यान ही नहीं कर सकता । उन्होंने ही मुझे बचाया है। इस दर से न जुड़ता, तो यह कुछ भी न देख सकता पिता जी का सम्बन्ध भी कुछ नज़र न आता है। सुबह चार बजे उठकर पिता जी के उपकार नज़र आए । भाग सिंह जी के घर से जो सेवा पाई, वह बहुत ही झुकाती हैं । उन्होंने मुझे समाज से जोड़ने का काम किया है। उनका बहुत सुन्दर रूर नज़र आया । काश! मैं कुछ सेवाकारी हो सकूं।

लंगर के लिए 16,000 रूपये के करीब दान प्राप्त हुआ लंगर का जो घाटा होगा वह श्रीमान बलबहादुर सिंह जी पूरा करेंगे ।

बहुत सारे जनों ने अपने माता पिता का फूलों के हारों से सत्कार करते हुए उनके चरणों को प्रणाम किया । कुछ सन्तानों ने घर में माता पिता का सत्कार करने के लिए हार लिए ।

इस प्रकार प्राय: तीन घण्टे बाद यह बहुत हितकर सत्संग समाप्त हुआ ।

विशेष सत्संग

पाठक गण यह जानकर खुशी अनुभव करेंगे कि देव आश्रम, डेरा बस्सी (चण्डीगढ़) में 10 अप्रैल 2015 शुक्रवार शाम से 10 दिन का विशेष सत्संग रखवा जा रहा है। जो साथी सेवक (विशेषकर गुरू मिशन में सेवा की चाह रखने वाले साथी) इस सत्संग से लाभ उठाने के इच्छुक हों, वह अवश्य दर्शन दें । मौसम अनुसार आवश्यक बिस्तर भी लाने की कृपा करें।

निवेदक

बलदेव सिंह

जीवन – प्रसंग

शुक्रिया कहें बात बन जाएगी

शुक्रिया एक ऐसी संवेदना है, जो जीवन के बेहतरीन रास्ते खोलती है। जो लोग आभार व्यक्त करना जानते है, उन्हें ज़िंदगी जीने की कला आती है। आईए जाने शुक्रिया कहने के कुछ खास अंदाज :

- प्रकृति और सृष्टि के प्रति आभारपूर्ण खैया रखें।
- हर छोटे से छोटे काम को सम्मान और बराबर महत्व दें ।
- खयाल रहे आप जिनके प्रति आभार व्यक्त कर रहे हैं, वे किसी भी उम्र के हो सकते हैं। यदि वह आपसे उम्र में छोटे हैं तब भी खुले मन से उन्हें शुक्रिया कहें।
- एक ग्रीटिंग कार्ड या खूबसूरत फूल भी आपकी भावनाओं को प्रकट करने के लिए एक बेहतरीन विकल्प साबित हो सकता है।
- फिल्मों के शौकीनों को आप एक फिल्म का टिकट भी दे सकते हैं। चॉकलेट या कुकीज भी उपहार में दे सकते है।
- मित्रों को गाने या गज़लों की सीडी भी दी जा सकती है। प्रकृति प्रेमियों और गार्डनिंग के शौकीनों को नर्सरी से पौधे लाकर दें ।
- एक सरप्राइज पार्टी का आयोजन करके आप अपना आभार व्यक्त कर सकते हैं।
- उस व्यक्ति के लिए रात्रि का भोजन या एक कप कॉफी पिलाकर भी आभार व्यक्त कर सकते हैं।
- और अंत में एक बहुत सरल, लेकिन प्रभावी और कारगर नुस्खा है, एक अच्छी मुस्कान के साथ शुक्रिया कहें ।

अहंकारी नहीं, बुद्धिमान लोगों की संगत में रहें

एक बार एक राजा अपने राजगुरु से अहंकार में पूछता है कि राजा को क्या करना चाहिए? उसका क्या काम है? राजगुरु कहते हैं कि आप वाकई में सीखना चाहते हैं? राजा गुस्से में कहता है कि मैं सच में सीखना चाहता हूं। राजगुरू कहते हैं कि सीखने के लिए छात्र बनना होगा और एक छात्र अपने शिक्षक से ऊंची जगह पर नही बैठता ।

इसलिए राज सिहांसन को छोड़कर जमीन पर बैठें और मैं आपके सिंहासन पर बैठूंगा । राजा चुपचाप जमीन पर और राजगुरु सिंहासन पर बैठ जाता है। राजगुरू चुप हो जाता है। इस पर राजा उसे पढ़ाने को कहता है। राजगुरू बोलता है कि राजा का कर्तव्य प्रजा में अहंकारी लोगों को सुधारना और नम्र व्यवहार के लोगों को आगे बढ़ाना है। ये सुन कर राजा को अपनी गलती का एहसास होता है।

वह राजगुरु से माफी मांगता है और गलती का एहसास कराने के लिए शुक्रिया अदा करता है। नम्र लोग जल्दी सीखते हैं। अहंकारी लोग आजीवन कुछ नहीं सीख पाते हैं। कुछ लोग सफलता दिमाग पर चढ़ा लेते हैं और यह अहंकार बन जाती है। अपने आस – पास ऐसे लोगों को रखें जो आपकी सफलता को जांच पर व्यवहार में आए बदलाव के बारे में बता सकें ।

कुछ सफल लोग बुद्धिमान लोगों को साथ रखने के बजाय जी – हुजूरी में विश्वास करने वाले लोगों में रहना पसंद करते है। ऐसे लोग सफल लोगों में नकरात्मक भावनाओं का संचार करते हैं। इससे सफल

लोग खुद को विनाश की राह पर ले जाते हैं। बॉलीवुड अभिनेता सलमान खान ने अहंकारी दोस्तों का साथ छोड़कर समझदार लोगो की संगति में रहना पसंद किया । उनकी सफलता और खुशियों का कारण भी यही है। समय – समय पर अपने दोस्तों का आकलन करें। इससे आपको सही और गलत का फर्क पता चलेगा । इनफोसिस के संस्थापक नारायण मूर्ति ने खूबसूरत जिंदगी व्यतीत की है।

उन्होंने कभी खुद को गलत आदतों, बातों या लोगों में फंसने नहीं दिया । उनकी सफलता में बुद्धिमान दोस्तों और पत्नी सुधा मूर्ति का महत्वपूर्ण योगदान है। अपने आस – पास रहने वाले बुद्धिमान लोगों का शुक्रिया अदा करते रहें। क्योंकि वे आपके पैर जमीन पर रखने में मददगार साबित होते हैं। आप जितना नम्र रहेंगे, उतना ज्यादा सीखेंगे । उतना आगे बढ़ेंगे ।

पत्नी का इलाज कराते – कराते गैरों से बना दर्द का रिशता

किसी को खून की जरूरत हो तो वह सबसे पहले उसकी जरूरत पूरी करने निकल पड़ेंगे । कोई लावारिस लाश हो तो भी अंतिम संस्कार पूरे विधान से करेंगे । सड़क पर गाड़ियों तले कुचला गया कोई जानवर भी मिले तो दिल पसीज उठता है। उसके जख्मों पर मरहम और देखभाल मानो परिवार के सदस्य की तरह करते हैं। यह पहचान है चण्डीगढ़ पुलिस में असिस्टेंट सब – इंस्पेक्टर राकेश कुमार रसीला की । समाज और दूसरों के हित के लिए काम करने का संकल्प ले चुके राकेश कुमार की जिंदगी के मायने सिर्फ एक घटना के बाद पूरी तरह बदल गए । आज वह चंडीगढ़ ही नहीं पूरी देश की पुलिस फोर्स के इकलौते सिपाही हैं, जो दूसरों की जान बचाने के लिए 112 बार ब्लड डोनेट कर चुके हैं यहीं नहीं करीब 450 लावारिश लाशों को अंतिम संस्कार के साथ ही वह खुद की बॉडी भी रिसर्च आदि के लिए 15 साल पहले ही पीजीआई को डोनेट करने का एलान कर चुके हैं।

बकौल राकेश साल 1992 में उनकी पत्नी अनु रसीला बीमार पड़ी तो पीजीआई के डॉक्टर भी जवाब दे गए । बचने के आसार नहीं थे, बताया गया था कि उन्हें संतान भी नही हो सकती । उम्मीद के सहारे चेकअप के लिए बार बार पीजीआई ले गया । ड्यूटी में लापरवाही न हो, इसलिए क्राइम ब्रांच से पीजीआई चौकी अपना ट्रांसफर कराया । पीजीआई में देखा कि दूसरों के दर्द के आगे मेरी मुश्किलें तो कुछ भी नहीं । राकेश बताते हैं – ड्यूटी के बाद तीन साल तक अपना दर्द भूलकर ऐसे मरीजों की सेवा की, जिनसे कोई रिश्ता नहीं था । 1996 की सर्दियों में पत्नी का टेस्ट करवाया तो मानो चमत्कार हो चुका था । डॉक्टर भी रिपोर्ट पर भरोसा नही कर पा रहे थे । पत्नी पूरी तरह ठीक हो चुकी थी । कुछ समय बाद पता चला कि पत्नी प्रेग्नेंट है। शायद यह मरीजों की सेवा से मिली दुआओं का असर था । अब दुनिया के लिए कुछ लौटाने की बारी मेरी थी । इसके बाद राकेश जहां भी किसी को मदद की जरूरत होती, मदद के लिए आगे बढ़ते हैं। ब्लड डोनेशन कैंप में हर तीन महीने बाद खून दान करके मानव सेवा करते हैं। कहते हैं – सबसे बड़ा सुकून तब मिलता है, जब किसी लाचार के चेहरे पर मुस्कान ला पाता हूं ।

श्राद्ध की सभा

श्रीमान सीताराम जी के श्राद्ध का साधन नाभा गेट संगरूर में, मन्सा देवी मंदिर के विशाल हाल में किया गया, जिसके लिए उनके सपुत्र डा० नवजोत कालड़ा, उनके पारिवारिक वा स्नेही जनों के द्वारा बहुत अच्छा प्रबन्ध किया गया । सभा स्थल को सुन्दर, सफेद चादरों से सजाया गया। ऊंची स्टेज बनाई गई और पूजनीय भगवान की छवि को बहुत सुन्दर ढंग से रखा गया, उसके नीचे श्रीमान सीताराम जी की सुन्दर नई फोटो रखी गई । उनकी पसंद के कुछ फल और उनके प्रयोग की कुछ वस्तुएं रखी गई। श्रद्धांजली अर्पण करने के लिए कुछ फूलों के हार वा पत्तिया रखी गई। बाहर से आने वाले जनों के लिए बहुत शानदार नाश्ते का प्रबन्ध किया गया । चण्डीगढ़, फरीदाबाद, कल्याण, पदमपुर, मल्लेका, कपूरथला, गोनियाना, केसूपूरा आदि स्थानों से धर्म सम्बन्धी श्रीमान सीता राम जी को श्रद्धांजली देने के लिए पहुंचे। शहरवासी, रिश्तेदार वा कई गांवों से स्नेहियों का समूह इस कदर उमड़ा हुआ था कि इतने बड़े हाल में बैठने की जगह नहीं थी । 600 के लगभग हाज़री थी ।

श्राद्ध की सभा 12.45 पर शुरू हुई । सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी थे । भजन के बाद पूजनीय भगवान का छवि द्वारा अर्चण और देवस्तोत्र के गान और व्याख्या के बाद श्रीमान सीताराम जी का फूलों के हारों वा पत्तियों द्वारा सन्मान प्रदर्शन किया गया ।

फिर सभापति जी ने हृदयगत भावों से सहाय प्रार्थना की उसके बाद ''परलोक के सम्बन्धियों को हम नहीं बिसराएगे'' नामक भजन का गान किया । फिर सभापति जी ने बताया कि श्रीमान सीता राम जी की तरह हम सबने ही चले जाना है। हम इस शोकमय अवसर को गुरू कृपा से हितकर बना सकते हैं। श्रीमान जी ने देव धर्म की शिक्षा अनुसार चार मूल प्रश्नों के उत्तर दिए । मनुष्य जीवन क्या है? मनुष्य ने जीवन में क्या करना है? मौत के बाद श्रीमान सीताराम जी कहां चले गए ? स्थूल शरीर की मौत के बाद मनुष्य जीवन का क्या बनता है? मनुष्य की जीवनी शक्ति (आत्मा) का वर्णन करते हुए बताया कि खाना, पीना, मौज बहार मनुष्य का लक्ष्य नहीं । नीच शक्तियों से मोक्ष और उच्च शक्तियों को पैदा करना मनुष्य का लक्ष्य है। दूसरों की रक्षा और विकास में ही मनुष्य की रक्षा और विकास है।

श्रीमान सीता राम जी के जीवन पर चर्चा करते हुए उनकी संर्घष यात्रा (1947) पाकिस्तान से लेकर शुरू हुई। छोटे छोटे काम करके आर्थिक तरक्की की । नौजवानी में कई खाने पीने की आदतों का शिकार हो गए । देव धर्म की संगत 30 – 32 वर्ष की उमर में मिल गइ। तो जीवन का नक्शा ही बदल गया । देव समाजी श्रीमान शादीलाल जी की संगत से उनका और विकास हो गया । ईमानदार बन गए । संयमी बन गए और माता पिता के लिए और सत्कार पैदा हो गया । बच्चों की पढ़ाई के लिए यत्नशील हो गए । अपने बेटे को डाक्टर बनाने में सफल हो गए । उसका जीवन पवित्र था । उनके हाथों बच्चीयां सुरक्षित थी । वह सत्संगों में अवश्य पहुंचते थे । सभापति जी के ब्यान के बाद कुछ और जनों ने श्रीमान जी को श्रद्धांजली अर्पण की ।

<u>श्रीमान बलबहादुर सिंह जी :–</u> उन्होंने उनके श्रद्धावान सेवाकारी और शुक्रगुजार जीवन को बताकर उन्हें श्रद्धांजली अर्पित की । बताया कि वह प्रति वर्ष भाई भग्नि व्रत मनाते । पकवान बनवाते अपने भाईयों को बुलाते उन्हें भेंट देते, यह उनका नियमित साधन था । यह उनके देव समाजी होने का सबूत था ।

भाईयों का बहुत सम्मान करते थे ।

श्रीमान मेहर सिंह जी :– बहुत कीमती धर्म सम्बन्धी थे । श्रद्धावान थे। बहुत कम पढ़े लिखे होकर भी बेटे को डाक्टर बनाया । उन्होंने स्नेह–मयी परिवार की सर्जना की । उनकी बेटियों और दामादों ने भी बहुत सेवा की।

डाक्टर अमनदीप अग्रवाल जी :– वह एक नेक आत्मा थे । खुशमिजाज थे । हमेशा प्रसन्न रहते । वह अपने परिवार व समाज से जुड़े हुए थे । वह Self made person थे । सारे परिवार में अच्छे संस्कार फूट फूट कर भरे हुए हैं। परिवार में एकता है। मुझे सारे परिवार को निकट से देखने का अवसर मिला है। मैंने देखा कि उनका बेटा, बेटियां, दामाद सबने न दिन देखा, न रात एक झुझारू जज़बे से सेवा की । उनकी रूहानी ताकत और रहनुमाई हमारे साथ है।

सब आने वाले स्नेही जनों को परिवार की ओर से धन्यवाद किया । बहुत सारे शोक प्रस्ताव आए :–

1) रिटायरड म्यूंसिपल कर्मचारी दल संगरूर (पंजाब)
2) प्रेम बस्ती गली न० 4 वैलफेयर कमेटी
3) संगरूर (जिला) पैंशनरज ऐसोसिएशन
4) इंडियन मैडिकल ऐसोसिएशन (पंजाब)
5) इंडियन मैडीकल ऐसोसिएशन (Headquarter) नई दिल्ली
6) इंडियन मैडिकल ऐसोसिएशन संगरूर (पंजाब)
7) नैशनल Integrated Medical Association Distt Council Sangrur

फिर शुभ कामना सम्बन्धी भजन गाया गया। सभापति जी ने शुभ कामना की । परिवार की ओर से शाददार खाने का प्रबन्ध था । सबको खाना खिलाया गया और 20,000 रूपये देव धर्म मिशन के लिए परिवार की ओर से दान में प्राप्त हुए ।

दान प्राप्ति

सरदार मनमोहन सिंह जी सिद्धू (सपुत्र सरदार गुरूमेल सिंह जी सिद्धू साबक, (Director Agriculture, हरियाणा) ने अपनी श्रद्धेय माता जी के देहान्त उपरान्त उनकी शुभ इच्छा के अनुसार गुरू महाराज के शुभ कारज के निमित्त 10 हज़ार रूपये दान में दिए । हम उनकी शुभ भावना का सम्मान करते हैं और इस अच्छी रक्म दान में देने के लिए उनके धन्यवादी हैं।

बलदेव सिंह
मन्त्री

सूचना

धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने , कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :–

श्रीमान बलदेव सिंह जी,
House No. 3154, Sector 21-D, Chandigarh - 160 022
Phone : 0172 - 4638229, 2716914

शुभ संग्राम

महोत्सव से पहले 11 नवम्बर, 2014 से 16 नवम्बर, 2014 तक राजस्थान में शुभ संग्राम किया, जो पाठकों की सेवा में अब दे रहें हैं।

पदमपुर :– 9 बजे की यह सभा श्रीमान बल बहादुर सिंह जी ने करवाई । दो धर्म सम्बन्धी गज सिंह पुरा जी से और बंगा से खुशहाल सिंह जी पहुंच गए थे। इस सभा में सभापति जी ने नेचर के अटल नियमों को बताया, जिसके अनुसार करामातें असम्भव हैं। पर पूजनीय भगवान की शिक्षा इन्हीं नियमों पर आधारित है। हर घटना किसी शक्ति के द्वारा होती है। पूजनीय भगवान की देव शक्तियों की शक्ति से कैसे कैसे जीवन नेकी में परिवर्तित हुए हैं, उनके बहुत से उदाहरण पेश किए ।

12.11.2014 :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने धर्म की आवश्यकता पर बताया। पूजनीय भगवान ने फरमाया है कि धर्म की आवश्यकता नीच सुखों से बचने और सुख शान्ति प्राप्त करने के लिए है। क्योंकि मनुष्य सुख से जीना चाहता है। नीच भावों से परिचालित होकर उच्च गति नहीं हो सकती । नीच गतियों से आत्मा का नाश होता है। देवात्मा की रोशनी में आत्मा का नाश दिखाई देता है। मनुष्य विनाश से बचना चाहता है।

12.11.2014 रात 9.00 बजे:– इस सभा के सभापति श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि नेचर में हर गति शक्ति द्वारा होती है। मनुष्य जो कुछ सोचता है, बोलता है, कोई क्रिया या अमल करता है, उसकी परिचालक कोई न कोई शक्ति होती है। जिस भाव की तृप्ति होती है, वह बलवान होता जाता हैं। यदि उसके भीतर कृतज्ञता, हमदर्दी, श्रद्धा के भाव है तो वह भी अपनी तृप्ति चाहते हैं। श्री देवगुरू भगवान देवात्मा के असरों से आए परिवर्तनों के बहुत से उदाहरण उन्होंने पेश किए हैं।

13.11.2014 सुबह 9 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि बुरा बनने के कारण मनुष्य के भीतर वर्तमान है। उनसे किस कदर बदनामी होती है। बड़े बड़े राजनैतिक और धार्मिक लीडर अपनी नाना वासनाओं के अधीन जेलों में गए हुए हैं। स्वाद अनुराग, काम अनुराग, स्वेच्छाचारिता भयानक खेल रचाते हैं। मेरी मर्ज़ी चले यह भी बड़ी घातक बिमारी है। उदाहरणों के द्वारा उन्होंने इन नीच भावों द्वारा हुई घटनाओं का बखान किया। हमें ऐसी ज्योति की आवश्यकता है कि जो हमें इन भावों को दिखाकर उनसे निजात दिलाए जो परम पूजनीय भगवान ही दिखा सकते हैं।

13.11.2014 शाम 9 बजें :– इस सभा में बलबहादुर सिंह जी ने बताया कि धर्मो की यह शिक्षा बड़ी हानिकारक है कि यह संसार माया है। परम पूजनीय भगवान देवात्मा ने फरमाया है कि जो वजूद जीवित वा अजीवित हमारे बोधों वा तर्को के अनुसार साफ़ नज़र आते हैं वह मिथ्या या माया नहीं हो सकते । चारों जगतों के वजूद सत्य हैं । कुछ सम्बन्ध ऐसे हैं कि जो हमारे जीवित रहने और विकास करने के लिए आवश्यक हैं। वह माया कैसे हो सकती है। इन सम्बन्धों में उच्च गतियां करना ही धर्म है। जीवन उच्च अमलों से ही बनता है। सतगुरू ने ऐसे उच्च जीवन धारी पैदा किए हैं।

14.11.2014 सुबह 9 बजे :– सभापति श्रीमान बलदेव सिंह जी ने बताया कि मनुष्य को अपने आप अपने शारीरिक रोग भी नज़र नहीं आते । पर इन रोगों को जानने के अनेकों यन्त्र हैं । अपनी परिचालक शक्तियों को जानने के लिए कोई यन्त्र नहीं हैं। परन्तु मनुष्य की आन्तरिक अवस्था को दिखाने के लिए

Regd. Postal No.CHD (0077) 2015-17
Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88

कारगर नहीं । परम पूजनीय भगवान मनुष्य की आन्तरिक अवस्था दिखाते हैं। उनके प्रभावों को पाकर अनेकों जन अपराधों, पापों और मिथ्या से बचे हैं। उन्होंने उदाहरणों सहित अपने विषय को स्पष्ट किया ।

करणपुर 14.11.2014 :– दोपहर को श्रीमान बलबहादुर सिंह जी श्री हरभजन सिंह जी के साथ करणपुर चले गए । श्री प्रकाश चंद जी दीवान और श्री और गोपाल जी पहले ही वहां जाकर संग्राम कर रहे थे । 14 से 16 नवम्बर तक वहां रहकर साथियों समेत श्रीमान जी ने शुभ संग्राम किया । श्रीमान बलदेव सिंह जी इन दिनों पदमपुर में संग्राम करते रहे।

1 बजे के लगभग Deffodils Public School में श्रीमान बलबहादुर सिंह जी ने कुछ देर के लिए स्टाफ और विद्यार्थियों को सम्बोधन किया, जिसमें बच्चों को अधिक से अधिक प्यार देना, उन्हें शारीरिक सजा पूर्ण रूप से न देने के लिए प्रेरित किया । स्टाफ मैम्बरज़ ने बहुत उत्साह दिखाया, अगले दिन मिलने का समय मांगा ।

14.11.2014 रात 8.00 बजें :– को श्री हरभजन सिंह जी के घर सभा रखी गई। इसमें सभापति जी ने बताया कि धर्म का आरम्भ घर से होता है। घर में माता पिता का स्थान विशेष होता है। जिनके व्यवहार माता पिता के सम्बन्ध में अच्छे होंगे, उनके दूसरे सम्बन्धों में भी अच्छे होंगे । श्री देव गुरू भगवान माता–पिता, बहन–भाई, पति–पत्नी, आदि के सम्बन्ध कैसे सुन्दर वा बेहतर बनाते हैं, उनकी बहुत सुन्दर और प्रभावदायक उदाहरणें पेश की गई। फिर सभापति जी ने अपने भीतर आए परिवर्तन को वर्णन किया । हाजरीन बहुत प्रभावित हो रही थी ।

दिन के समय अध्यापिकों और लड़कियों को श्रीमान जी मिलते रहे । हरभजन सिंह जी और रिटायरड हैडमास्टर बहुत देर तक हितकर बातचीत करते रहे।

15.11.2014 रात 8 बजें :– सभापति जी ने उच्च संगत के उच्च असरों का वर्णन किया भगवान देवात्मा अद्वितीय उच्च संगत प्रदान करते हैं।

15.12014 सुबह 9 बजें :– इस सभा में नीच घृणा का घातक रूप बताया, उसका antidote श्रद्धा और दीनता हैं। सभा के बाद हरभजन सिंह जी ने 1½ महीने के लिए शराब छोड़ी। कई बच्चों ने माता पिता को प्रणाम करने का वायदा किया। हैडमास्टर साहिब ने इस विशेष प्रोग्राम के लिए बहुत ज़ोरदार शब्दों से धन्यवाद किया और ऐसा सत्संग रखने की प्रार्थना की ।

(एक हाजरीन)

श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री–देव–धर्म–मिशन, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक "धर्म जीवन" ने **Surya Laser Den, Chandigarh** *से छपवाकर म. न. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

Book Posts